JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निर्मल वर्मा के साहित्य में संत्रास की भावना

अरुण स्वामी रिसर्च फैलो

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर राजस्थान

शोध निर्देशिका डॉ. शालिनी मूलचंदानी

प्रस्तावनाः–

आधुनिक हिन्दी तथा–साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों में निर्मल वर्मा का विशिष्ट स्थान है। **श्री धनंजय वर्मा** के अनुसार ''निर्मल वर्मा की कहानियॉ जीवन की वे अनुभूतियॉ है जिन्हे हम एकांतिक अनुभूतियॉ कहते है। ये अन्तर्मुखी और व्यक्ति परक होती है। उनका प्रकाश बाहर नही, आंतरिक होता है, निर्मल वर्मा की कहानियों एवं उपन्यासों का विवेचन करते हुए **डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र** का निरीक्षण उल्लेखनीय है–– निर्मल वर्मा की कहानियां आधुनिक संचेतना और मानवीय जीवन–बोध की कहानियॉ है। मानवीय संबंधो के संस्पर्श और मन स्थितियों के अन्तरविरोध से समन्वित उनके पात्रों के वेयक्तिक सन्दर्थ इतने धनीभूत है कि मानवीय मन के आन्तरिक प्रभाव और उसकी प्रांजल व्यापकता को भीतर से खोलते चलते है। जीवन यथार्थ की आन्तरिक पकड भोगे हुए क्षणों की अनुभूति और आधुनिकतम जीवन की दौड – धूप सभी कुछ का तथ्यात्मक विश्लेषण नही, अपितु संवेदनात्मक प्रस्तुतीकरण इन कहानियों में है।

निर्मल वर्मा ने अपने कथा–साहित्य को आधुनिक जीवन के यथार्थो से संबंद्व कर देने का सफल प्रयास किया है। परम्परा का विरोध और आधुनिक भाव–बोध का स्वीकार दोनो निर्मल वर्मा की कहानियों में दृष्टिगोचर होते है। इस और संकेत करते हुए कृष्णा अग्निहोती का मन्तव्य उल्लेखनीय है ''निर्मल वर्मा एक विशिष्ट कथाकार है जिन्होने नये वस्तु क्षेत्रों का निर्वाह भी नये कलात्मक ढंग से किया है। इनकी कहानियो में अन्तर्मुखी गहन अनुभूतियां है। उनकी कहानी प्राचीन परम्पराओं का विरोध करती है। कथानक को रूढ ढंग से हटाकर नये रूप से प्रस्तुत किया। इनकी अनुभूतिया

इसमें पिराये गये है। युद्व के फलस्वरूप वे मानवीय मूल्य भी विघटित होने लगे, जो सदियों से प्रतिष्ठित थे। पारिवारिक संबंधों में विघट, नैतिकता की नयी व्यख्या करने का प्रयास, ईश्वार पर अनावस्था आदि उस सन्तस्त वातारण की खासियते थी।

''निर्मल वर्मा के साहित्य में संत्तास की भावना''

निर्मल वर्मा की अधिकाशं कहानियां आधुनिक जीवन की संचेतना और जीवनबोध का प्रतिनिधित्व करती है। मूलतः निर्मल वर्मा व्यक्तिवादी कलाकार है। उनकी कहानियॉ में भीक में अकेलेपन का अनुभव करने वाले और बेरोजगारी के चंगुल में फंस कर तडपनेवाले नौजवानों की आवाज गूॅज उठती है। अपनी कहानियॉ की रचना प्रक्रिया के बारे में स्वंय निर्मल जीने इस प्रकार लिखा है मेरे लिए भोगे हुए यथार्थ को पुन र्जीवित करने की आकांक्षा कभी नही रही अगर कभी आकांक्ष रही है तो उन खाली बीरान जगहो को भरने की, जो भोगते हुए क्षण की बदहवासी और भूलने की हटबडाहट में अनुछए रह गये थे, जिन्हे छूने का साहस करना अपने आप से परे की बात होगी।

निर्मल वर्मा की कहानियों में सन्त्रासः–

निर्मल वर्मा की कहानियॉ आधुनिक अस्तित्वदर्शन की पृष्ठभूमि में लिखित और आधुनिकताबोध से अनुप्राणित है। उनकी कहानियों में अस्तित्व दर्शन के विभिन्न पहलू, अकेलापन, अलगाव, संबंधो में बिखराव, विसंगति, मृत्यु सन्त्रास, क्षण की महत्ता आदि विद्यमान है, हालॉकि सन्त्रास की भावना को उजागर करने में उन्हे सर्वाधिक सफलता मिली

02.

को तलाशने का प्रयास किया गया है, अब उनके उपन्यासो का अनुशीलन अस्तित्ववादी दर्शन की उपलब्धियों के आधार पर करना समीचीन होगा। निर्मल वर्मा के चार उपन्यास अब तक प्रकाशित है वे दिन, लाल टीन की छत एक चिथडा सुख और रात का रिपोर्टर। ये चारो उपन्यास अस्तित्ववादी जीवन–दर्शन से प्रभावित रचनाए है और आधुनिक हिन्दी साहित्य मे बहुचर्चित रचनाओं की कोटि में आती है। चूंकि सन्त्रास अस्तित्व दर्शन का एक मुख्य पहलू है, इसलिए निर्मल जी के उपन्यासो में संत्तास की भावना का समावेश शुरू से अन्त तक दृष्टिगोचर होता है। आगे के चरणों में उनके प्रत्येक उपन्यास का संत्तास बोध के परिप्रेक्ष्य में विवेचन करना उचित होगा।

वे दिन युद्वोपरान्त सन्तास की मानसिकता का आईना

वे दिन निर्मल वर्मा का प्रथा उपन्यास है जिसका प्रकाशन 1964 में हुआ था। उपन्यास का कथानक अत्यतं लघु है और तदनुरूप उसका कतेवर भी बहुत ही छोटा है। इसमें केवल ढाई दिनों की कथा वर्णित है। उपन्यास का वातावरण विदेशी है। पुराने एवं नये प्राग के वातावरण में घटती एक प्रेम–कथा के इर्द–गिर्द तथा तन्तु का विकास होता है। किन्तु द्वितीय विश्वयुद्वोत्तर भीषण नर–संहार और कांसन्ट्रेशन कैपो की विभीषिका का सन्त्रस्त परिवेश सर्वत्र व्याप्त है। विश्वयुद्वोत्तर यूरोप के जीवन मे जो आमूल बदलाव आये है, उनका सच्चा स्वरूप प्रस्तुत उपन्यास में उपलब्ध है। आधुनिक जीवन की विवशता हार, लाचारीख व्यर्धता, घुटना, बेगानापन, अनिश्चितता, असुरक्षा का अहसास, संत्तास आदि के कई सूत्र

03

है। महानगरीय जीवन की मजबूरियों में फॅसे आधुनिक मुनष्य के सन्त्रास–भरे जीवन–सन्र्देयों को निर्मल वर्मा ने यथार्थवादी दृष्टि से चित्तित किया है।

निर्मल वर्मा की अनेक कहानियों में गहरे सन्त्रास बोध का समावेश पाया जाता है। ''लन्दन की एक रात'', ''पराये शहर में, ''एक शुरूआ'', ''अन्धेरे में'', जलती झाडी'', एक कुत्ते की मौत'', ''डायरी का खेल'', ''माया दपेण'', ''अन्तर'', ''धांगे'', ''डेढ इचं ऊपर'', ''खोज'', ''सितम्बर की एक शाम'', ''अमालिया'', ''उनके कमरे'' आदि अनेक कहानियां में बहुस्तरीय सन्त्रास के कई मर्मस्पर्शी प्रसंग प्रस्तुत किये गये है। कुछ कहानियॉ में महायुद्व की विभीषिका से उत्पन्न सन्त्रास का चित्रण है तो कुछ अन्य कहानियॉ में पारिवारिक जीवन में संबंधो के बिखराव एवं विसंगतियों से उभरनेवाले सन्त्रास का आकलन है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

01. डॉ. श्याम सुन्द मिश्र–अस्तित्ववाद
02. कृष्णा अगिनहोती–स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी
03. निर्मल वर्मा–चीडो पर चॉदनी–भूमिका
04. निर्मल वर्मा–दूसरी दुनिया
05. निर्मल वर्मा–मेरी प्रिय कहानियॉ पृ. 32
06. निर्मल वर्मा–पिछली गर्मियों में भूमिका
07. डॉ. इन्द्रनाथ सिंह–आज की हिन्दी कहानी : प्रगति और प्रयोग पृ. 42
08. डॉ. नामवर सिंह–कहानी – नयी कहानी पृ 52
09. डॉ. धनजय वर्मा–आलोचना पृ. 112
10. निर्मल वर्मा–कला का जोखिम पृ. 73

4.

व्यक्ति की एकान्तता का चित्रण

निर्मल वर्मा ने व्यक्ति को उसके समाजगत परिवेश में चित्रित न करके उसकी अकेली, खामों स्थिति में चित्तित करने का प्रयास किया है। निर्मल जी के इस रूझान की और संकेत करते हुए श्री धनंजय वर्मा ने लिख है – निर्मल वर्मा की कहानियां जीवन की वे अनुमूतियां है, जिन्हे हम एंकातिक अनुभूतियां कहते है। वे अन्तर्मुखी और व्यक्तिपरक होती है।

अस्तित्यवादी रूझान

निर्मल वर्मा की रचना–प्रक्रिया का अनुशीलन करने पर विदित हो जाता है कि उनकी सृजनात्मक उपलब्धियों पर एक विशेष प्रकार के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य के रचनाकारो का गहन प्रभाव पडा है और उन्होने एक विशेष रचना–शौली की रचनाएॅ की है।

निर्मल वर्मा की अधिकाशं कहानिया विदेशी भाव–भूमि को लेकर लिखी गयी है जिसमे व्यक्ति–जीवन की शून्यता और नीरसता प्रमुख है। निर्मल जी मूलतः वैयक्तिक कहानी कार है, इसलिए व्यक्तिगत समस्याओं का गहराई से अंकन उनकी कहानियॉ में दृष्टिकोचर होता है। **डॉ. वासुदेव शर्मा** के अनुसार–''निर्मल वर्मा की कहानियॉ आधुनिक व्यक्ति के वैयक्तिक प्रेम, स्त्री–पुरूष के कुटते–बनते आपसी संबधो तथा आपसी विशक्ति–भावना से संबंधित है जिनमें व्यक्ति की बढती हुई मानसिकता, टुटते हुए जीवन–मूल्य व आदर्श आधुनिक तनाव, नीरसता, अजनबीपन, आर्थिक तथा अन्य अनेक परिस्थितियो से जूझते हुए इन्सान की कहानी है।

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में सन्त्रास

प्रस्तुत अध्याय के पहले परिच्छेद में निर्मल वर्मा की रचना प्रक्रिया और उनके कला एवं साहित्य संबंधी दर्शन

5.

व्यक्ति की अनुभूतियॉ है। आधुनिक परिवेश और सन्दर्भ में व्यक्ति कितने ही अन्तर्द्वन्द्वों का शिकार है। उन्होने सामातिकता के उदेश्य के लिए कहानी नही लिखी : वह तो व्यक्ति का भोगा हुआ यथार्थ है, उसकी सूक्ष्म भावनाओं का व्यार्थ है।

जन्म और बचपन

निर्मल वर्मा का जन्म **3 अप्रेल 1929** को प्रकृति रमणीय शिमला में हुआ। आपका बचपन पहाडो पर ही बीता। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भी शिमला में ही हुई। उस पहाडी इलाकों के वातारण में बालक निर्मल के मन को अत्यधिक प्रभावित किया, जिसकी प्रतिक्रिया उनकी कई रचनाओं में स्पष्ट परिलक्षित होती है। सर्दी के मौसम में अक्सर पहाडो के निवासी तराइयों में जाया करते है, परन्तु निर्मल अपने भाई–बहनों के साथ शिमला में ही रहने को मजबूर हुआ था। अपने बचपन का वर्णन करते हुए निर्मल वर्मा ने 'चीडने पर चांदनी'में इस प्रकार लिखा है–शिमला के वे दिन आज भी नही भूला हूॅ। सर्दियॉ शुरू होते ही शहर उजाड हो जाता था। आस–पास के लोग बोरिया–बिस्तर बांधकर दिल्ली की और ''उत्तरदायी'' शुरू कर देते थ। बरामदे की रेलिंग पर सिर टिकाये हम भाई–बहन उन लोगो को बेहद इष्या से देखते रहते जो दूर अजनबी स्थानों की और प्रस्थान कर जाते थे।

उच्च शिक्षा

दिल्ली विश्वविद्यालय के विख्यात कॉलेज **सेन्ट स्टीफेन्स** से निर्मल जी ने इतिहास में एम.ए. किया । उसके बाद कुछ वर्ष अध्यापन–कार्य भी किया। इसके पश्चात वे स्वतंत्र लेखन की और अग्रसर हुए।

6.

निर्मल वर्मा का साहित्यिक योगदान

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दर्शन

लम्बे अर्से के प्रयास के फलस्वरूप निर्मल वर्मा के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण में गहरा विदेशी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इतिहास के विद्यार्थी होने के कारण भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का गहरा ज्ञान उन्हे पहले ही मिला था। भारतीय संस्कृति का अपना स्वतन्त्र व्यक्तिव्य और अस्मिता है। इतिहास के विद्यार्थी होने के नाते ऐतिहासिक तथ्यों की पृष्ठभूमि में हर बात को 'आंकने की और उनका रूझान हमेश ही रहा है।

लेखकीय प्रतिबद्वता पर जोर

निर्मल वर्मा हमेशा ही लेखकीय प्रतिबद्वता के समर्थक रहे है। 'पिछली गर्मियों मे'' कहानी संग्रह की भूमिका में उन्होने लिखा **''यह टोटल टेरर** की स्थिति है ऐसी स्थिति में अगर नयी कहानी कुछ हो सकती है तो सिर्फ अन्धेरे में एक चीख। अपने को पूर्ण रूप से इस टेरर से संयुक्त कर पाना यहॉ लेखक का कमिटमेंट आरम्भ होता है।

सामाजिक चेतना

निर्मल वर्मा की कहानियों में सामाजिक चेतना का उचित समावेश पाया जाता है। कुछ आलोचकों का आरोप है कि निर्मल जी मे देशीय और सामाजिक दृष्टिकोण का नितान्त अभाव है। परन्तु ध्यान से परखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि निर्मल वर्मा सच्चे अर्थ में सामाजिकता को प्रश्रय देनेवाले कलाकार रहे है। इस प्रसंग में **डॉ. इन्द्रनाथ सिंह** का मत उल्लेखनीय है–इन की कहानी कला को सामातिक चेतना से अनुप्राणित माना गया है।